आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2656 • उदयपुर, रविवार 03 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

करंट ने छीने, संस्थान ने दिये कृत्रिम पांव

तीन वर्ष पूर्व दूधिया खेड़ी (भीलवाड़ा) निवासी 22 वर्षीय हीरालाल घर की चिनाई करते हुए 11 केवी के करंट तार की चपेट में आ गए जिससे बेसुध होकर तीसरी मंजील से जमीन पर गिरे। दुर्घटना में दोनों पैट टूट गए। साथ में काम कर रहे मजदूरों ने अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों को ऑपरेशन कर हीरालाल के दोनों पैर काटने पड़े। पैरों के अभाव में हीरालाल के दोनों पैर काटने पड़े। पैरों के अभाव में हीरालाल घर से बाहर नहीं निकल सकते थे। बेटे की बेबसी कृषक पिता किशन देख नहीं सकते थे लेकिन निर्धनता से पीड़ित आखिर करते भी क्या? 2.5 वर्ष घर की चारदीवारी में ही गुजारे। टीवी के माध्यम से एक दिन संस्थान के बारे में पता चला। परिवारजन को उम्मीद की किरण दिखी तो हीरालाल को संस्थान ले आए। संस्थान ने निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाए अब हीरालाल रोज चिनाई करने आता है व परिवार का पेट पाल रहा है। संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए हीरालाल बताते हैं कि अगर संस्थान ने उन्हें सहारा नहीं दिया होता तो उनकी जिंदगी बहुत बदतर हो सकती थी।

पैरों की विकृति से मुक्त हुई ज्योत्स्ना

ज्योत्सना के दोनों पांव जन्मजात बाहर की तरफ मुड़े हुए थे। परिवार ने घर पर ही मालिश कर उम्मीद की कि विकृति दूर हो जाएगी। लेकिन उम्र के साथ समस्या बढ़ती गई। ठाणें (मुम्बई) निवासी ज्योत्सना को इसके कारण स्कूली शिक्षा भी छोड़नी पड़ी। परिवार की खराब माली हालत को देखते हुए कपड़ो की पैकिंग का घर बैठे काम शुरू किया। पिता टेक्सी चालक हैं, जिन्होंने अल्प आय के बावजूद बेटी का हर सम्भव उपचार करवाया, जिस अस्पताल में दिखाने की सलाह मिली, वहां इसे ले गए लेकिन लाभ नहीं मिला। तभी किसी ने इन्हें नारायण सेवा संस्थान में इस तरह की विकृतियां निःशुल्क सर्जरी के माधम से ठीक होना बताया।

ज्योत्सना को लेकर पिता अगस्त 2021में संस्थान आए, जहां विशेशज्ञ चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद पांवों के क्रमशः आवश्यक अन्तराल में ऑपरेशन किए। ज्योत्सना के अनुसार दोनों पांव की विकृति दूर हो चुकी हैं। लेकिन अभी उसे अपने पांवों पर खड़ा होने में थोड़ा वक्त और लगेगा। ज्योत्सना संस्थान में कम्प्युटर कोर्स की ट्रेनिंग कर आत्म निर्भर जीवन की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प कर चुकी हैं।

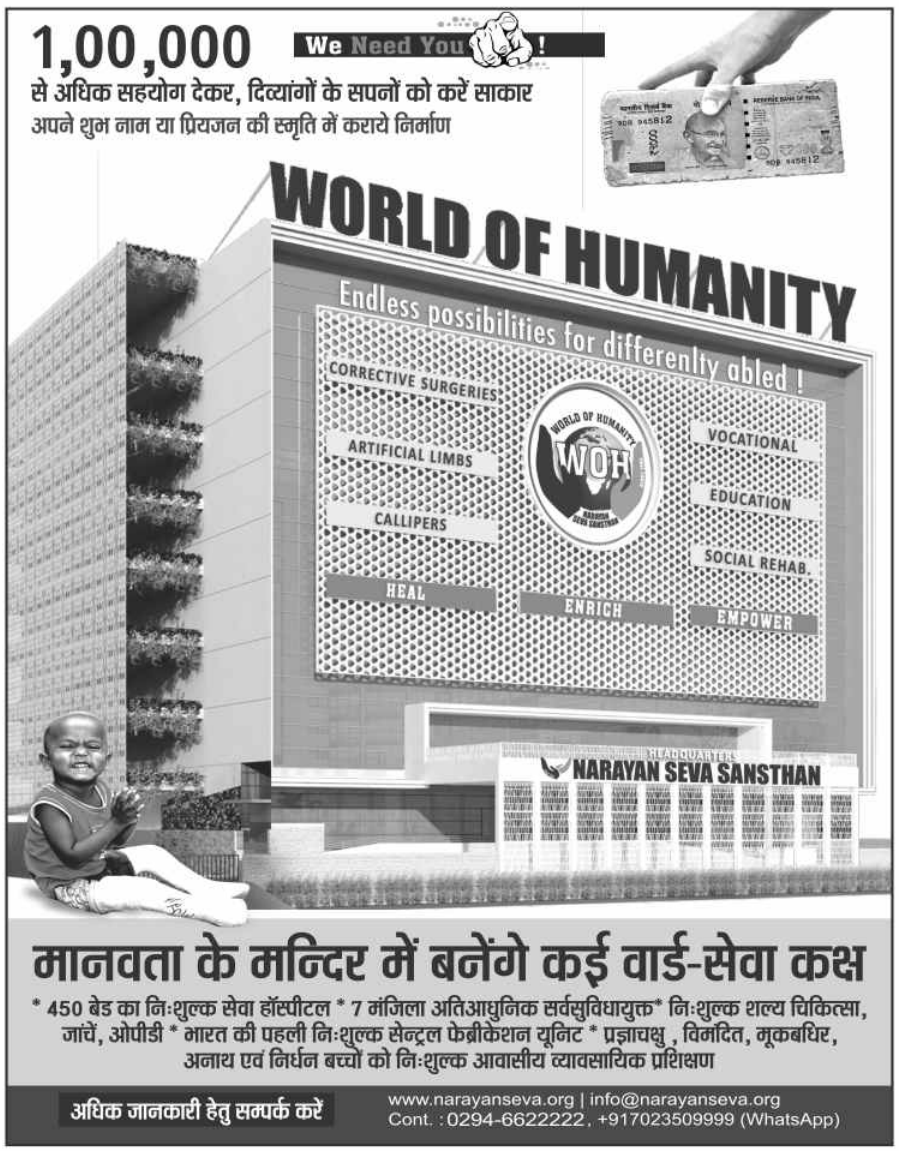

गतिवान हुए ठहरे कदम

दुर्घटनाओं अथवा रोगजनित कारणों से हाथ–पैरों से महरूम भाई–बहनों को देश के विभिन्न भागों में शिविरों के माध्यम से निःशुल्क मोड्यूलर कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने की दृष्टि से माप एवं वितरण शिविर लगाए गए। प्रस्तुत है, फरवरी–22 में लाभार्थियों का विवरण।

बीदर– कनार्टक के बीदर नगर में 6 फरवरी को पन्नालाल–हीरालाल शिक्षण संस्थान में केन्द्रीय मंत्री माननीय भगवत खुबाजी के सौजन्य से सम्पन्न शिविर में 24 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए, जबकि 9 लोगों को कैलीपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमार अग्रवाल व विशिश्ट अतिथि केन्द्रीय मंत्री श्री अमर जी हिरेमत, श्री बृजकिशोर मालानी, श्री पुनीत बलवीर थे। अध्यक्षता श्री नागराज करपुर ने की। कृत्रिम अंग टेक्नीशियन किशन जी सुथार ने लगाए। सहयोग हरिप्रसाद जी व गोपाल जी स्वामी ने किया।

कैमूर– रानी देवी मेमोरियल हॉस्पीटल, कैमूर (बिहार) में हॉस्पीटल ट्रस्ट मोहनियां एवं तान्या विकलांग सेवा संस्थान के सयुक्त सौजन्य से 6

फरवरी को आयोजित शिविर में 80 दिव्यांग बन्धु–बहिनों का पंजीयन हुआ। जिनमें से 15 के लिए कृत्रिम हाथ–पैर व 6 के कैलिपर बनाने के टेक्नीशियन किशन जी सुथार ने नाप लिए, जबकि संस्थान के डॉ. पंकज कुमार ने 10 दिव्यांगों का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि तान्या विकलांग सेवा संस्थान के डॉ. राजेश शुक्ला थे। अध्यक्षता प्रबंध निदेशक डॉ. अविनाश कुमार सिंह ने की। विशिष्ट अतिथि श्री प्रेमशंकर पाण्डेय थे। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी ने अतिथियों का स्वागत किया। व्यवस्था में मुकेश जी त्रिपाठी, सत्यनारायण जी मीणा व बहादुर सिंह जी मीणा ने सहयोग किया।

शेगांव– महराष्ट्र के शेगांव में 6 फरवरी को मेगा दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर रोटरी क्लब के जिला गवर्नर डॉ. आनन्द झुनझुनवाला के मुख्य आतिथ्य में माहेश्वरी भवन में आयोजित किया गया। जिसमें 470 दिव्यांगों को पंजीयन हुआ, इनमें से 155 के कृत्रिम अंग एवं 27 के कैलीपर बनाने का पी. एण्ड.ओ. श्री नेहांश मेहता व श्री रामनाथ ठाकुर ने माप लिया। जबकि डॉ. वरूण ने 29 दिव्यांगों का सुधारात्मक सर्जरी के लिय चयन किया। रोटरी क्लब के सौजन्य से सम्पन्न शिविर के विशिष्ट अतिथि डॉ. पी.एम. भूतड़ा, डॉ. दिलीप भूतड़ा व श्री आशीष जी टिबड़ेवाल थे। अध्यक्षता शाखा प्रेरक श्री नंदलाल मूदंड़ा ने की। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा, देवीलाल जी मीणा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया।

मानसा–जन्डसर गुरूद्वारा बहादुरपुर बरेटा, मानसा (पंजाब) में बिग हॉफ फाउण्डेशन के सहयोग से 6–7 फरवरी को दिव्यांग जांच, व चयन कृत्रिम अंग माप शिविर लगाया गया। जिसमें 435 दिव्यांग बन्धु–बहनों का रजिस्ट्रेशन हुआ। जिनमें से दुर्घटनाओं व रोगों में अपने हाथ–पांव खोने वालों के लिए 200 कृत्रिम अंग व 41 के कैलीपर बनाने के लिए पी. एण्ड.ओ. चित्रा ने माप लिए जबकि शेश की जांच कर डॉ. विजय जी कार्तिक ने 46 दिव्यांगों का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि श्री रामसिंह शेखु व विशिष्ट अतिथि सर्वश्री प्रदीप गुप्ता, मनिन्दर कुमार, कुलदीप सिंह, चक्रवर्ती पाठक, शंकर कुमार व सुरेश कुमार थे। अध्यक्षता आत्माराम विद्यालय के प्राचार्य श्री विजय कुमार ने की। शिविर प्रभारी अखिलेश जी अग्निहोत्री व प्रभारी मधुसूदन शर्मा ने अतिथियों का स्वागत–सत्कार किया। व्यवस्थाओं में सुनील जी श्रीवास्तव, कपिल जी व्यास व प्रवीण जी यादव ने सहयोग किया।

शहजादपुर– सुन्दरी माता परिसर शहजादपुर जिला अम्बाला (पंजाब) में 13 फरवरी को सीताराम नाम बैंक के सौजन्य से आयोजित शिविर में 24 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग व 3 के लिए कैलीपर बनाने का माप संस्थान के टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैश्णव ने लिया जबकि ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. राकेश जी ने 5 दिव्यांगों का सुधारात्मक सर्जरी के लिए चयन किया। शिविर प्रभारी श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री व स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री राकेश कुमार जी ने मुख्य अतिथि श्री अजीत कुमार शास्त्री तथा अध्यक्ष मुकुट बिहारी कपूर का स्वागत–अभिनन्दन किया।

होशंगाबाद– रोटरी क्लब शेगांव (महाराश्ट्र) व सदर बाजार होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) के सहयोग से 13–14 फरवरी को होशंगाबाद के अग्निहोत्री गार्डन में दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप का मेगा शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 342 दिव्यांगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। जिनमें से पी.एण्ड.ओ. सुश्री नेहा जी व टेक्नीशियन श्री किशनलाल जी ने 144 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम हाथ–पैर व 34 के लिए कैलीपर बनाने का मेजरमेन्ट किया। सर्जन डॉ. रामकृपाल जी सोनी ने 27 का सर्जरी के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि राज्य विधान सभा के सचिव श्री अवधेश प्रताप सिंह थे। अध्यक्षता रोटरी मंडलाध्यक्ष–3040 कनर्ल महेन्द्र मिश्रा ने की। विशिश्ट अतिथि सर्वश्री जितेन्द्र जैन, नरेन्द्र जैन, धीरेन्द्र दत्ता, प्रदीप गिल, श्रीमती रितु ग्रोवर, आशीश अग्रवाल व गजेन्द्र नारंग थे। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी व अनिल जी पालीवाल ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। सहयोग बजरंग जी व गोपाल जी स्वामी ने किया।

पुणे– अंकुशराव लांगड़े नाट्य सभागृह पुणे (महाराष्ट्र) में 14 फरवरी को कृत्रिम अंग माप एवं वितरण शिविर भासरी के डॉयनोमिक क्लब, राजगुरू नगर के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री महेश दादा लांगड़े व विशिश्ट अतिथि श्री नितिन लांगडे, श्री अशोक पगारिया व रो. अजीत वालुंज थे। अध्यक्षता सुरेन्द्र सिंह झाला ने की। अतिथियों का स्वागत व शिविर संचालन प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने किया। शिविर टेक्नीशियन भगवती जी पटेल ने 27 दिव्यांगों को उनके माप के अनुसार कृत्रिम अंग व 10 को कैलीपर पहनाएं। शिविर व्यवस्था में देवीलाल जी मीणा, हरीश जी रावत व भरत जी भट्ट ने सहयोग किया।

अजमेर– हनुमान व्यायामशाला, अजमेर (राजस्थान) में 19 फरवरी को समाज सेवी श्री महेश जी सांखला के सहयोग से सम्पन्न शिविर में 22 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग व 11 के कैलीपर बनाने का संस्थान के पी.एण्ड.ओ. श्री आर.एम. जी ठाकुर ने माप लिया। जबकि डॉ. राकेश जी ने निःशुल्क ऑपरेशन के लिए पांच दिव्यांगों का चयन किया। मुख्य अतिथि समाज सेवी श्री गोविन्द गर्ग थे। अध्यक्षता पंत्र बंशीलाल जी ने की। विशिश्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेश जी सोनी भी मंचाशीन थे। अतिथियों का स्वागत शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

देह देवालय। पहले मां कदी–कदी छोटा था तो कहता। अरे! ये भारीर तो मलमूत्र का है अरे! भाई मलमूत्र रो है पण खून भी तो इमे है, हृदय भी तो है। अनाहत चक्र भी तो है, नाभि में मणीपुर चक्र भी तो है। गला में विभुद्धि चक्र भी तो है, यो हृदय अनाहत चक्र भी तो है। स्वाधिश्ठान चक्र, मूलाधार चक्र और हजार कमल दलों वाला सहस्त्रार चक्र। ये भारीर तो बहुत महान है। एक मूर्तिकार भारीर बनाने लगा भाइयों और बहनों, आठ–नौ महिना में तो पूरो भारीर वणाई दी दो, पण चरण बनाने में वने आठ महिना अलग लाग्या। खाली चरण–चरण में। तो मालिक पूछ्यो कि– इमे थने इतनो टाईम क्यों लाग ग्यो ? बोले– महाराज, ये चरण कमल है। इन चरण कमलों में चक्रवर्ती सम्राट, अच्छे–अच्छे योगिराज भी अपना माथा झुकाएंगे। रत्नजटित माथा उनका इन्हीं चरणों में झूकेगा। इन चरणों की रज को माथे पे धारण करेंगे। इसलिये चरण बनाना बहुत महान है, मस्तिष्क बनाना सरल है। कथा जो व्यथा मिटावे। आपाणे आज हिज फरक पड़ जाणो चीजे। सासूजी से जतरो मीठो बोलो वणीउ और मीठो बोलजो और मन में भी मिठास रो भाव लाजो। कदी मन में मिठास नी वे कड़वास वे और ऊपरऊं बोलो तो, ज्यादा लाभ नी है भाई। एक कोई आपणो बच्चो आ जावे मिट्टी से सन कर, तो मिट्टी लपेट के आ जावे, गन्ध आ जावे तो क्या कहते हैं ? मूर्ख, पाजी, पागल कहीं का ? पर ये कहते हुए भी मन में प्यार है कि– म्हारों टाबर है यो। मूर्ख भी केई दी दो, पाजी भी केई दी दो, पागल कहीं का ? पर अपने हाथ से स्नान करा के, चल चल आजा जल्दी से बाल्टी के नीचे बैठ जा। तो मेरे को स्नान करा दो। मिट्टी क्यों लगाई भई ? आईन्दा मत लगा जे।

गजरौला– जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भरतीय ग्राम जिला अमरोहा (उत्तरप्रदेश) के गजरौला में 22 फरवरी को सम्पन्न शिविर में 221 दिव्यांग बन्धु–बहनों का पंजीयन हुआ। पी.एण्ड.ओ. नेहा जी अग्निहोत्री व टेक्नीशियन किशन जी सुथार न 128 दिव्यांगों के माप लिए। इनमें से 89 के लिए कृत्रिम अंग व 39 के कैलीपर तैयार किए जाएंगे। 19 दिव्यांगों का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया गया। मुख्य अतिथि निदेशक जन सम्पर्क विभाग श्री सुनील दीक्षित थे। अध्यक्षता डॉ. सुजिन्द्र फोगाट ने की। विशिश्ट अतिथि डॉ. नितिन, सेवा प्रेरक अजय कुमार जी व श्रीमती आरती थी। हरिप्रसाद जी ने संचालन किया।

औरंगाबाद– आर्यन महाजन नाट्यशाला मंच परिसर में औरंगाबाद (बिहार) नगर परिशद के अध्यक्ष श्री उदयकुमार जी के सहयोग से 20 फरवरी को सम्पन्न मेगा शिविर में 505 दिव्यांगों का रजिस्ट्रेशन हुआ। जिनमें से पी.एण्ड. ओ. डॉ. पंकज कुमार जी व टेक्नीशियन नरेश जी वैश्णव ने 90 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग व 42 के कैलीपर बनाने का माप लिया। सर्जन डॉ. अमित कुमार जी ने दिव्यांगों की जांच कर 75 का चयन सजरी के लिए किया। उद्घाटन मुख्य अतिथि एवं शिविर सौजन्यकर्ता श्री उदय कुमार ने किया। अध्यक्षता रोटरी क्लब के डॉ. महावीर प्रसाद जैन ने की। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी ने अतिथियों को स्वागत–सम्मान किया। विशिश्ट अतिथि सर्वश्री डॉ. चन्द्रशेखर, विनोद कुमार, गिरिजा राम व डॉ. अंजली थी। संचालन मुकेश जी त्रिपाठी, बहादुर सिंह जी मीणा व सत्यनारायण जी मीणा ने किया।

खाजूवाला– विश्व हिन्दु परिशद के सौजन्य से खाजूवाला (बीकानेर–राजस्थान) स्थित जाट धर्मशाला में 22 फरवरी को आयोजित शिविर में 32 दिव्यांगो को कृत्रिम अंग पहनाएं गए। शिविर का उद्घाटन सीबीसी चेयरमैन सर्वश्री भागीरथ ज्याणी, रणवीर भानू, सुभाश प्रजापत, फूलदास स्वामी, राजाराम जाखड़, करणाराम जाखड़, मगाराम गोदरा, श्याम लाल जांगिड़, ओम झोरड़, बंशी व्यास, सोहन स्वामी, रामचन्द्र गोदरा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलन कर किया। संचालन राजकुमार जी ढोलिया ने व धन्यवाद ज्ञापन मुकेश जी शर्मा ने किया। भगवती जी पटेल, कपिल जी व्यास व हरीश जी रावत ने व्यवस्था में सहयोग किया।

कल्याण– पुण्योदय पार्क–क्लब हाउस, कल्याण (महाराश्ट्र) में 27 फरवरी को केन्द्रीय मंत्री भगवत खुबाजी के सहयोग से सम्पन्न कृत्रिम अंग वितरण शिविर मं 23 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व 13 को उनके माप के अनुसार कैलीपर वितरित किए गए। मुख्य अतिथि महिन्द्रा लॉजिस्टक के प्रबंध निदेशक श्रीराम प्रवीण स्वमीनाथन थे। अध्यक्षता नगर सेवक श्री प्रभुनाथ भोईर ने की। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद के अनुसार विशिश्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री जयवंत भोईर नगर सेवक, महेश जी अग्रवाल, शाखा संयोजक ठाणे, कमल जी लोढ़ा शाखा संयोजक, डॉ. विजय पंवार, व सुनील वायल मंचासीन थे। कृत्रिम अंग व कैलीपर पहनाने का कार्य टेक्नीशियन किशन जी सुथार ने किया। संचालन आश्रम प्रभारी मुकेश जी सेन ने किया।

कैथल– आर.के.एस.डी. कॉलेज कैथल (हरियाणा) में दो दिवसीय विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर 26–27 फरवरी को सम्पन्न हुआ। संस्थान की कैथल शाखा के तत्वावधान में आयोजित शिविर में 163 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व 77 को कैलीपर लगाए गए। मुख्य अतिथि आर.के.एस.डी. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के चेयरमैन श्री साकेत मंगल थे। अध्यक्षता बॉक्सर– अवार्डी श्री मनोज कुमार ने की। विशिश्ट अतिथि सर्वश्री राजेश कुमार, पंकज बंसल, एल.एम.बिंदलिश, शाखा संयोजक डॉ. विवेक जी गर्ग, शाखा संरक्षक सतपाल जी मंगला, डॉ. बी.डी. गुप्ता, डॉ. नलिन शर्मा, अनिल जी गोयल व श्रीमती गुरप्रीत जी कौर थी।

सम्पादकीय

मनुष्य उन वस्तुओं और व्यक्तियों के पीछे अहर्निश पागलों की तरह भाग रहा है, जो स्थायी रूप से उसके पास रहने वाली नहीं है। दुःख इस बात का है कि इसे समझते–बूझते भी वह इससे आँख मूंदे हुए है। सब जानते हैं कि एक न एक दिन मरना है, किन्तु उस मरण को सुधारने का प्रयत्न नहीं करते। मनुष्य अच्छी–बुरी हर परिस्थिति में सत्य पथ पर अविचलित चलता रहे तो उसे जीवन में अपने–पराए का बोध और दुःख कभी अनुभव भी नहीं होगा। इच्छाओं के पूर्ण न होने पर ही मनुष्य दुखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जीवन के हर मोड़ पर लिये जाने वाले छोटे या बड़े निर्णयों का आधार हमारे उद्देश्य पर निर्भर है, जहाँ उद्देश्य नहीं वहाँ जीवन नहीं। यही बात हमारे ऋषि–मुनि, सन्त और शास्त्र भी करते रहे हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि आखिर उद्देश्य क्या हो और उसे निर्धारित कैसे करें? इसका हमारे पुरखों ने बहुत सीधा–सादा उत्तर भी तलाशकर हमें दिया है और वह है –केवल यह जान लें कि "मैं कौन," इस विषय में यदि हम जागरूक हो गए तो उद्देश्य तो मिला ही, जीवन की कई समस्याओं का हल भी मिल जाता है। "मैं" से ऊपर उठकर हम सत्य को, वास्तविकता को स्वीकार करने लगेंगे तो सन्देह के सारे बादल छंट जाएंगे। हम अपने भीतर स्पष्टता और शुद्धता महसूस करने लगेंगे। यही समझ, शक्तिरूप, मार्गदर्शक बनकर हमें मानवता के लिए करुणा, दया, संवेदना और समभाव के साथ जीवन जीने के लिए सक्षम बनाएगी। तब प्राणिमात्र से स्नेह–प्यार हमारे लिए स्वाभाविक और अपरिहार्य हो जाएगा। जीवन में आनन्द की हिलोर उठेगी, समस्याओं के बन्धन टूट जाएंगे। जीवन उन्मुक्त हो उठेगा।

कुछ काव्यमय

जब तक भू पर एक भी, बाकी रहे अनाथ।
तब तक कैसे बैठ लें, धरे हाथ पर हाथ।।
जिनके मन में उपजते, सेवा के सद्भाव।
नाविक बन खेते प्रभु, उनकी जीवन नाव।।
दीन दुःखी की पीर हर, देना होगा त्राण।
तभी मुखर कुरआन हो, वाणी पिटक पुराण।।
कदम–कदम पर हे प्रभो, उठते ये उद्गार।
आंसू ना देखूं कहीं, नहीं सुनूं चीत्कार।।
सेवा–रथ के सारथी, बनना होगा आज।
गीता–ज्ञान मिले तभी, समरस बने समाज।।

व्यक्तिगत व सार्वजनिक

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए आचार–संहिता दी। उसका एक व्रत है–भोगोपभोग व्रत। इसका अर्थ है, भोग की सीमा करना। संपत्ति कितनी ही हो सकती है, पर वैयक्तिक भोग की सीमा वांछनीय है।

विश्व के धनाढ्य व्यक्ति रोकफेलर की बेटी लंदन गई। वह बाजार में कुछ खरीदना चाहती थी। अनेक फोटोग्राफर साथ में हो गए। वह एक जूते की दुकान पर गई। चप्पल देखे। उनका मूल्य अधिक था। उसने कहा–मैं खरीद नहीं सकती, मूल्य अधिक है। पत्रकार साथ में था। उसने पूछा–'आप तो अरबपति की

लाड़ली हैं, फिर पैसे की बात क्यों करती हैं? रोकफेलर का संस्थान लाखों–करोड़ों का दान करता है। इस स्थिति में आपकी बात समझ में नहीं आती।' वह बोली–मैं एक अरबपति की लड़की हूं। व्यापार में करोड़ों रुपये लग सकते हैं, पर हमारा व्यक्तिगत बजट बहुत कम है। हम अपने व्यक्तिगत उपभोग के लिए अधिक खर्च नहीं कर सकते।'

इस घटना के संदर्भ में मुझे भगवान् महावीर के द्वारा निर्धारित श्रावक आचार–संहिता के एक व्रत की स्मृति होती है। व्रत है भोग–उपभोग की सीमा। भगवान् महावीर का अनन्य श्रावक था आनन्द, करोड़ों का स्वामी। अपार संपदा, विस्तृत व्यवसाय, कुटुम्ब का अधिपति। पर उसका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सीधा और सादगीपूर्ण था। स्वयं के रहन–सहन और खान–पान पर बहुत सीमित व्यय होता था। – **कैलाश 'मानव'**

तूफान का सामना

लड़की कार चला रही थी। पास वाली सीट पर पिता बैठे थे। कुछ आगे तेज तूफान दिखाई देने लगा। लड़की पिता से बोली–कार रोक दूँ?

पिता ने उत्तर दिया–नहीं, कार मत रोको। चलती चलो। कुछ आगे जाने पर तूफान का वेग और तेज हो गया। लड़की कार पर सही नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने पिता से पुनः पूछा–अब तो कार रोक दूँ?

उसने देखा कुछ कारे वहीं सड़क के किनारे पर खड़ी थी और उनके चालक तूफान के गुजरने के इंतजार में थे। बहुत मुश्किल से वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण रखती हुई, पिता की आज्ञानुसार लगातार कार चलाती रही और 2–3 किमी आगे जाने के बाद पिता से पूछ बैठी– आपने उस समय रूकने के लिए क्यों नहीं कहा जब मैं तूफान में बड़ी मुश्किल से कार चला पा रही थी और

अब आप रूकने के लिए कह रहे हैं, जबकि तूफान गुजर चुका है।

इस पर पिता ने कहा–जरा पीछे मुड़कर देखो। लड़की ने देखा तो पाया कि पीछे तूफान का वेग बढ़ गया है जबकि वह तूफान को पार कर के आगे निकल चुके है। पिता ने बेटी को समझाया–परिथितियां बेहतर होने की प्रतीक्षा में लोग जीवनभर वहीं रह जाते हैं जब जो लोग तूफान के बीच में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, वे ही सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

मित्रो! सतत् रूप से किये गए छोटे –छोटे प्रयायों से बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा। राह में बाधाएँ कितनी ही क्यों न आएं परंतु प्रयास सदैव अनवरत् होने चाहिए। चरेवैति। चरेवैति।

– **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अस्पताल का वातावरण बरबस ही कैलाश को अपनी तरफ खींच रहा था। अब उसके मन में यह इच्छा जाग्रत होने लगी कि वह कोई ऑपरेशन होते हुए देखे। किस तरह डाक्टर शरीर की चीर–फाड़ करते हैं, शरीर के अन्दर क्या होता है, डाक्टर कैसे शल्य क्रिया कर सब ठीक कर देते हैं। एक दिन डा. खत्री से उसने अपनी इच्छा व्यक्त की। डा. ने कहा कि कभी ऐसा कोई ऑपरेशन करना पड़ा तो वे उसे बुला लेंगे। कैलाश की बहुत जिज्ञासा थी कि मानव शरीर की आन्तरिक रचना देखे। वह चाहता था कि सभी लोगों को अपने शरीर के आन्तरिक अंगों की जानकारी होनी चाहिये। अस्पतालों में शारीरिक अंगों के चार्ट वह गौर से देखता था तथा महसूस करता था कि इनका मोडल के रूप में प्रदर्शन हो तो ज्यादा अच्छी तरह से समझ में आ सकता है। पिण्डवाड़ा दुर्घटना से लाये घायलों को तीन–चार दिन हो रहे थे। कैलाश का अस्पताल का फेरा नियमित कार्यक्रम बन गया था। वह अपने साथ हमेशा फल–बिस्किट वगैरह लेकर जाता था। इनकी संख्या बढ़ने लगी तो उसने कमला से कन्धे पर लटकाने का एक झोला सिलवा लिया। अस्पताल में इस बीच कुछ नये मरीज भी भर्ती हुए थे। कैलाश सबको अपने झोले से फल वगैरह निकाल कर देता था। पुराने मरीज तो सब उसे जानते थे मगर नये मरीज उसकी तरफ जिज्ञासा से देखते कि यह कौन व्यक्ति है जो इस तरह से सेवा करता है। कैलाश ने सबसे मित्रता कर ली तो सब हिलमिल गये। इसी बीच एक दिन डा. खत्री ने उसे बुला लिया। पास के किसी गांव में एक ग्रामीण के पेट में बैल ने सींग मार दिये थे, उसकी आंतें फट गई थी बड़ा ऑपरेशन था। कैलाश ने मास्क लगा कर ऑपरेशन थियेटर में प्रवेश किया। जीवन में पहली बार शरीर के अन्दर का हिस्सा देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया। भगवान की लीला भी अनूठी है, बाहर से भले–चंगे नजर आने वाले शरीर की आंतरिक रचना ऐसी जटिल होती है कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

अंश - 053

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

कद्दू खाने के फायदे

कद्दू में मुख्य रूप से बीटा केरोटीन पाया जाता है, जिससे विटामिन ए मिलता है। पीले और संतरी कद्दु में केरोटीन की मात्रा अपेक्षाकृत ज्यादा होती है। बीटा केरोटीन एंटीऑक्सीडेंट होता है जो शरीर में फ्री रैडिकल से निपटने में मदद करता है। कद्दू ठंडक पहुंचाने वाला होता है। इसे डंठल की ओर से काटकर तलवों पर रगड़ने से शरीर की गर्मी खत्म होती है। कद्दू लंबे समय के बुखार में भी असरकारी होता है। इससे बदन की हरारत या उसका आभास दूर होता है।

कद्दू का रस भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह मूत्रवर्धक होता है और पेट संबंधी गड़बड़ियों में भी लाभकारी रहता है। यह खून में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है और अग्नयाशय को भी सक्रिय करता है। इसी वजह से चिकित्सक मधुमेह के रोगियों को कद्दू के सेवन की सलाह देते हैं।

कद्दू के बीज भी बहुत गुणकारी होते हैं। कद्दू व इसके बीज विटामिन सी और ई, आयरन, कैलशियम मैग्नीशियम, फॉसफोरस, पोटैशियम, जिंक, प्रोटीन और फाइबर आदि के भी अच्छे स्रोत होते हैं। यह बलवर्धक, रक्त एवं पेट साफ करता है, पित्त व वायु विकार दूर करता है और मस्तिष्क के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। प्रयोगों में पाया गया है कि कद्दू के छिलके में भी एंटीबैक्टीरिया तत्व होता है जो संक्रमण फैलाने वाले जीवाणुओं से रक्षा करता है। शायद इन्हीं खूबियों की वजह से कद्दू को प्राचीन काल से ही गुणों की खान माना जाता रहा है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

संस्थान से मिले अंग, पाया रोजगार

मैं किशन लाल भील, उम्र 36, अचलाना, उदयपुर का रहने वाला हूँ। आठवीं कक्षा उत्तीर्ण हूँ। मैंने सन् 1995 से बस कण्डक्टरी का कार्य करना चालू किया था। बस का रूट भीण्डर से बडी सादडी था। 22 मार्च 2000 को बस का एक्सीडेंट हो गया। उस हादसे में कानोड़ निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई एवं 22 लोग घायल हो गये। उस हादसे में मेरे दोनों पैर कट गये। वहां के स्थानीय लोगों ने मुझे महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर में भर्ती करवाया। मेरे 4 ऑपरेशन हुए परन्तु सभी असफल रहे। फिर जिन्दगी बैसाखियों के सहारे चलने लगी। मेरे पैरों की स्थिति के कारण, हादसे के चार साल बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑटिफिशयल पैर लगाये गये, मैं बिना बैसाखियों के चलने लगा। परन्तु रोजगार के लायक नहीं था। जिसमें मैं अपने परिवारों का गुजारा कर सकूं मैंने संस्थान में आकर अपनी आपबीती सुनाई। संस्थान ने मेरे दुःख सुनकर मुझे रोजगार से जोड़ने के लिए चाय– नाश्ते का ठेला एवं आश्वयक सामग्री प्रदान की ताकि मैं अपने परिवार को भरण–पोषण कर सकूं। मैं संस्थान का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

भूखे को भोजन, बीमार को दवा, गरीब को वस्त्र, यही है नारायण सेवा। लाल बहादुर शास्त्री बहुत छोटे थे, जब एक बार भारत–पाकिस्तान युद्ध हुआ 1965 में। पाकिस्तान हारा और भारत जीता, उस समय किसी पत्रकार ने पूछा था, माननीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी आप तो बहुत छोटे कद के हैं। जो पाकिस्तान का तानाशाह है अयूब खान, जो युद्ध को हारा वो बहुत लम्बा है, आप बात करते थे तो कैसे करते थे? बोले कुछ नहीं पत्रकार साहब वो सिर झुकाकर बात करता था और मैं सिर उठा कर बात करता था। क्या झुकाना, क्या ऊँचा करना? मोदी साहब ने कहा कि आँख से आँख मिलाकर बात करें। न ही आँख ऊँची करना, ना ही आँख नीची करना, आँख से आँख मिलाना।

पीजी जैन साहब ठहरे और हाँ बाबूजी मैं कल आपके साथ चलता हूँ। एक –दो दिन और ठहरूँगा, आपसे बहुत बातें करनी हैं, बात करेंगे, हाथीपोल पधार गये। दूसरे दिन पीजी जैन साहब को लिया गया कोर्ट चौराहे से। उस समय वहाँ घासीराम जी अग्रवाल साहब उनके आदरणीय धर्मपत्नी अन्नी बाई जी अग्रवाल साहब बिराजी, उनको भी लिया और चाँदपोल, अम्बामाता से पालीवाल जी, उनके 8 साथियों को भी लिया। भगवान महावीर स्वामी का जयकारा लगाते हुए हाथीपोल से प्रस्थान किया।

मनोरमा जी आपसे परिचय करवाते हैं। ये पी.जी. जैन साहब आये हुए हैं, पारस मल जी, गुलाबचन्द जी जैन सोजत रोड़ के पास, हरियामाली, ये उनका पुत्र राजेश है, सम्बन्धी साले साहब हैं। माता जी सोहनी देवी जी कहती थी प्रेम देने का है, प्रेम वापस मिले या न मिले, प्रेम देने का ही है। बढ़ रहे हैं आगे, जसवन्तगढ़ में बढ़ रहे हैं आगे। आठ दिन पहले गये थे, स्थानक में जाकर परम् पूज्य पुष्कर मुनि जी महाराज को, पूज्य देवेन्द्र मुनि जी महाराज साहब को निवेदन किया था। आप व्यसन मुक्ति के बारे में बहुत फरमाते हैं। आप जैन साधु बन गये, सब कुछ छोड़ दिया आपने। आप मुँह पर मुँहपत्ती लगाते हैं। आपके कमरे में पंखा नहीं है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 406 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023